पाठ - गुरु और चेला

शब्दार्थ -

1. चेला - शिष्य
2. धेला - पैसा
3. डगरी - रास्ता
4. शीश - सिर, मस्तक
5. सुयश - प्रसिद्धि
6. पधारे - आये
7. अनबूझ - मूर्ख
8. भाजी - सब्जी
9. मुसीबत - समस्या
10. विवश - मजबूर
11. हाट - बाज़ार
12. खता - गलती
13. भिश्ती - पानी भरने वाला
14. शरारत - गलती
15. गफलत - भूल
16. हुक्म - आदेश
17. जल्लाद - फाँसी पर चढ़ाने वाला आदमी
18. दनादन - जल्दी-जल्दी
19. फौरन - तुरंत

egyanarchive

काव्यांशों की व्याख्या

1. गुरु एक थे और था एक चेला,
चले घूमने पास में था न धेला
चले चलते-चलते मिली एक नगरी,
चमाचम थी सड़कें चमाचम थी डगरी।
मिली एक ग्वालिन धरे शीश गगरी,
गुरु ने कहा तेज़ ग्वालिन न भग री।
बता कौन नगरी, बता कौन राजा,
कि जिसके सुयश का यहाँ बजता बाजा।

<u>सन्दर्भ</u> - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक **'रिमझिम भाग-5'** में संकलित कविता **'गुरु और चेला'** से ली गई हैं। इसके रचयिता हैं - **सोहनलाल द्विवेदी।**

<u>अर्थ</u> - एक गुरु थे और उनका एक चेला था। दोनों के पास एक भी पैसा नहीं था। फिर वे घूमने निकल पड़े। चलते-चलते वे एक नगर में पहुँच गए। नगर की सड़कें चमक रही थीं। उन्हें एक ग्वालिन दिख गई। उसके सिर पर घड़ा था। गुरु ने ग्वालिन को रोककर पूछा कि यह कौन-सी नगरी है और यहाँ का राजा कौन है? यहाँ किसकी प्रसिद्धि का डंका बजता है?

2. कहा बढ़के ग्वालिनने महाराज पंडित,
पधारे भले हो यहाँ आज पंडित।
यह अंधेर नगरी है अनबूझ राजा,
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।
गुरु ने कहा-जान देना नहीं है,
मुसीबत मुझे मोल लेना नहीं है।
न जाने की अंधेर हो कौन छन में?
यहाँ ठीक रहना समझता न मन में।

<u>सन्दर्भ</u> - पूर्ववत् ।

<u>अर्थ</u>- गुरु ने जब ग्वालिन से पूछा कि यह कौन-सी नगरी है और यहाँ का राजा कौन है तो ग्वालिन ने बढ़कर कहा-महाराज पंडित, भले ही आप यहाँ आए हैं लेकिन यह अंधेर नगरी है। इसका राजा निरा मूर्ख है। यहाँ सब कुछ टके सेर मिलता है, चाहे वह भाजी हो या खाजा। सुनकर गुरु का माथा ठनका। उन्होंने सोचा कि यहाँ रहना उचित नहीं क्योंकि किसी भी पल अंधेर अर्थात् कुछ भी अनर्थ हो सकता है। अतः उन्हें ऐसी मुसीबत में पड़कर जान नहीं देनी है। यहाँ से फौरन चल देना चाहिए।

egyanarchive

3. गुरु ने कहा किंतु चेला न माना,
गुरु को विवश हो पड़ा लौट जाना।
गुरुजी गए, रह गया किंतु चेला,
यही सोचता हूँगा मोटा अकेला।
चला हाट को देखने आज चेला,
तो देखा वहाँ पर अजब रेल-पेला।
टके सेर हल्दी, टके सेर जीरा,
टके सेर ककड़ी टके सेर खीरा।

<u>सन्दर्भ</u> - पूर्ववत्।।

<u>अर्थ</u>- ग्वालिन से यह जानने पर कि यह अंधेर नगरी है और यहाँ का राजा मूर्ख है, गुरु ने तुरंत उस जगह को छोड़ने का

निर्णय ले लिया। उसने चेले से चलने को कहा। परन्तु वह माना नहीं। गुरुजी चले गए और चेला रह गया। एक दिन वह उस नगरी का बाज़ार देखने निकला। वह हैरान रह गया यह जानकर कि वहाँ सब कुछ टके सेर बिक रहा था चाहे वह खीरा हो या ककड़ी, हल्दी हो या जीरा।।

4. टके सेर मिलती है रबड़ी मलाई,
बहुत रोज़ उसने मलाई उड़ाई।
सुनो और आगे का फिर हाल ताज़ा।
थी अंधेर नगरी, था अनबूझ राजा।।
बरसता था पानी, चमकती थी बिजली,
थी बरसात आई, दमकती थी बिजली।
गरजते थे बादल, झमकती थी बिजली,
थी बरसात गहरी, धमकती थी बिजली।

सन्दर्भ - पूर्ववत्।

अर्थ- उस अंधेर नगरी में सब कुछ टके सेर मिलता था। अतः चेले ने खूब रबड़ी मलाई खाई। कवि कहता है कि अब आप मूर्ख राजा की अंधेर नगरी का आगे का ताजा हाल सुनिए। उस साल वहाँ खूब बरसात हुई। खूब पानी बरसता । था, खूब बिजली चमकती थी और खूब बादल गरजते थे।

5. गिरी राज्य की एक दीवार भारी,
जहाँ राजा पहुँचे तुरत ले सवारी।
झपट संतरी को डपट कर बुलाया,
गिरी क्यों यह दीवार, किसने गिराया?
कहा संतरी ने-महाराज साहब,
न इसमें खता मेरी, ना मेरा करतब!
यह दीवार कमज़ोर पहले बनी थी,
इसी से गिरी, यह न मोटी घनी थी।

सन्दर्भ - पूर्ववत् ।

अर्थ- उस अंधेर नगरी में बरसात के दौरान इतनी भारी बारिश हुई कि राज्य की एक दीवार गिर गई। राजा तुरंत वहाँ पहुँच गया। उसने संतरी को बुलाया और उससे दीवार गिरने का कारण पूछा। संत्री ने झट जवाब दिया कि दीवार उसकी गलती से नहीं गिरी है। दरअसल दीवार कमजोर बनी थी मोटी और घनी नहीं। इसीलिए गिर गई।

egyanarchive

6. खता कारीगर की महाराज साहब,
न इसमें खता मेरी, या मेरा करतब!
बुलाया गया, कारीगर झट वहाँ पर,
बिठाया गया, कारीगर झट वहाँ पर।
कहा राजा ने कारीगर को सजा दो,
खेता इसकी है आज इसको कज़ा दो।
कहा कारीगर ने, ज़रा की न देरी,
महाराज! इसमें खता कुछ न मेरी।

सन्दर्भ - पूर्ववत्।

अर्थ- जब राजा ने संतरी से दीवार गिरने का कारण पूछा तो उसने कहा कि दीवार कमजोर बनी थी। इसीलिए गिर गई। इसमें गलती उसकी नहीं बल्कि कारीगर की है। कारीगर को फौरन बुलाया गया। राजा ने आदेश दे दिया कि कारीगर को सजा दो। इसकी गलती से दीवार गिरी है अतः इसे मौत दो। कारीगर बिना एक झण विलंब किए बोल पड़ा, महाराज! इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।

7. यह भिश्ती की गलती यह उसकी शरारत,
किया गारा गीला उसी की यह गफलत।
कहा राजा ने जल्द भिश्ती बुलाओ।
पकड़ कर उसे जल्द फाँसी चढ़ाओ।
चला आया भिश्ती, हुई कुछ न देरी,
कहा उसने-इसमें खता कुछ न मेरी।
यह गलती है जिसने मैशक को बनाया,
कि ज़्यादा ही उसमें था पानी समाया।

सन्दर्भ - पूर्ववत्।

अर्थ- जब राजा ने संतरी के माध्यम से जाना कि कारीगर की गलती से दीवार गिरी है तो उसने उसे फाँसी पर चढ़ाने का आदेश दे दिया। कारीगर ने तुरंत अपना बचाव किया। उसने भिश्ती को दोषी करार दिया। उसने राजा से कहा-उसकी गलती से दीवार गिरी है क्योंकि उसी ने गारा गीला कर दिया। राजा के आदेश पर भिश्ती को बुलाया गया। भिश्ती को देखते ही राजा ने उसे फाँसी पर चढ़ाने का हुक्म दे दिया। भिश्ती ने कहा-इसमें मेरी गलती नहीं है बल्कि मशक बनाने वाले की गलती है। उसी ने इतनी बड़ी मशक बना दी कि उसमें पानी ज्यादा समा गया जिसके कारण दीवार कमजोर हो गई और गिर गई।

egyanarchive

8. मशक वाला आया, हुई कुछ न देरी,
कहा उसने इसमें खता कुछ न मेरी।
यह मंत्री की गलती, है मंत्री की गफ़लत,
उन्हीं की शरारत, उन्हीं की है हिकमत।
चुराया न चमड़ा मशक को बनाया।
बड़ी है मशक खूब भरता है पानी,
ये गलती न मेरी, यह गलती बिरानी।

सन्दर्भ - पूर्ववत्।

अर्थ- भिश्ती बरी हो गया और उसके कहने पर मशकवाले को बुलाया गया। उसने भी चतुराई से अपना बचाव किया। कहा-दीवार गिरने में मेरी नहीं बल्कि मंत्री की गलती है। यह उन्हीं की भूल और उन्हीं की लापरवाही है। उन्होंने ही मुझे बड़े जानवर का चमड़ा दिलवा दिया। मैंने चमड़ा चुराया नहीं और एक बड़ी मशक बना दिया। इस मशक में पानी ज्यादा भरता है। इस प्रकार यह गलती मेरी नहीं बल्कि किसी और की है।

9. है मंत्री की गलती तो मंत्री को लाओ,
हुआ हुक्म मंत्री को फाँसी चढ़ाओ।
चले मंत्री को लेके जल्लाद फौरन,
चढ़ाने को फाँसी उसी दम उसी क्षण।
मगर मंत्री था इतना दुबला दिखाता,
न गर्दन में फॉसी का फंदा था आता।
कहा राजा ने जिसकी मोटी हो गर्दन,
पकड़ कर उसे फाँसी दो तुम इसी क्षण।

सन्दर्भ - पूर्ववत्।

अर्थ- जब राजा को बताया गया कि दीवार मंत्री की वजह से गिरी है तो उसने मंत्री को हाजिर होने का आदेश दिया। मंत्री आया तो राजा ने उसे फाँसी पर चढ़ा देने को कहा। सुनकर फौरन जल्लाद आ गया और मंत्री को उसी क्षण लेकर चला फाँसी पर चढ़ाने के लिए। किन्तु मंत्री काफी दुबला था। उसकी गर्दन इतनी पतली थी कि फाँसी के फंदे में नहीं आ पाती थी। अतः राजा ने उसकी जगह किसी मोटी गर्दन वाले को पकड़कर लाने को कहा ताकि उसे अच्छी तरह फाँसी पर चढ़ाया जा सके।

10. चले संतरी ढूँढ़ने मोटी गर्दन,
मिला चेला खाता था हलुआ दनादन।
कहा संतरी ने चलें आप फ़ौरन,

egyanarchive

महाराज ने भेजा न्यौता इसी क्षण।
बहुत मन में खुश हो चला आज चेला,
कहा आज न्यौता छकुँगा अकेला !!
मगर आके पहुँचा तो देखा झमेला,
वहाँ तो जुड़ा था अजब एक मेला॥

सन्दर्भ - पूर्ववत्।

अर्थ- अब संतरी मोटी गर्दन वाले व्यक्ति की खोज में निकल पड़े। बहुत जल्दी उन्हें चेला हलुआ खाते हुए मिल गया। उन्होंने चेले से कहा-महाराज ने आपको न्यौता दिया है। अतः फौरन आप चुले चलिए। चेला मन ही मन खुश हुआ। यह सोचकर कि राजा के दरबार में खूब छककर खायेगा। लेकिन आकर देखा तो वहाँ एक नया झमेला खड़ा था। चारों तरफ लोगों की भीड़ उमड़ी थी।

11. यह मोटी है गर्दन, इसे तुम बढ़ाओ,
कहा राजा ने इसको फाँसी चढ़ाओ!
कहा चेले ने-कुछ खता तो बताओ,
कहा राजा ने-'चुप' न बकबक मचाओ।
मगर था न बुद्ध-था चालाक चेला,
मचाया बड़ा ही वहीं पर झमेला!!
कहा पहले गुरु जी के दर्शन कराओ,
मुझे बाद में चाहे फाँसी चढ़ाओ।

सन्दर्भ - पूर्ववत्।

अर्थ- मोटी गर्दन वाले चेला को देखकर राजा ने तुरंत उसे फाँसी पर चढ़ाने का आदेश दे दिया। चेले ने राजा से पूछा कि आखिर मेरी गलती क्या है? कम-से-कम मेरी गलती तो बतायें। राजा ने फौरन यह कहकर उसे चुप करा दिया कि ज्यादा बकबक मत करो। लेकिन चेला बुद्ध नहीं था, चालाक था। उसने वहीं पर एक बड़ा झमेला खड़ा कर दिया। कहा मुझे फाँसी पर चढ़ाने से पहले मेरे गुरु के दर्शन कराओ।

12. गुरुजी बुलाए गए झट वहाँ पर,
कि रोता था चेला खड़ा था जहाँ पर।
गुरु जी ने चेले को आकर बुलाया,
तुरत कान में मंत्र कुछ गुनगुनाया।
झगड़ने लगे फिर गुरु और चेला,
मचा उनमें धक्का बड़ा रेल-पेला।

egyanarchive

गुरु ने कहा-फाँसी पर मैं चढ़ेगा,
कहा चेले ने—फाँसी पर मैं मरूंगा।

सन्दर्भ - पूर्ववत् ।

अर्थ- चेले के कहने पर उसके गुरुजी को बुलाया गया। उन्होंने चेले को रोते हुए पाया। उन्होंने उसे अपने पास, बुलाया और कान में कुछ मंत्र गुनगुनाया। फिर दोनों की आपस में भिडंत हो गई। दोनों जमकर लड़ने लगे। गुरु कहता था-मैं फाँसी पर चढ़ेगा। दोनों में से कोई अपनी जिद छोड़ने को तैयार न था।

13. हटाए न हटते अड़े ऐसे दोनों,
छुटाए न छुटते लड़े ऐसे दोनों।
बढ़े राजा फ़ौरन कहा बात क्या है?
गुरु ने बताया करामात क्या है।
चढ़ेगा जो फाँसी महूरत है ऐसी,
न ऐसी महूरत बनी बढ़िया जैसी।
वह राजा नहीं, चक्रवर्ती बनेगा,
यह संसार का छत्र उस पर तनेगा।

सन्दर्भ - पूर्ववत् ।

अर्थ- फाँसी पर चढ़ने के लिए गुरु और चेले में भिडंत हो गई। दोनों ऐसे लड़ने लगे कि हटाने से भी नहीं हटते थे। राजा ने बढ़कर पूछा कि आखिर बात क्या है? इस पर गुरु ने बताया कि यह फाँसी पर चढ़ने का शुभ मुहूर्त है। इस ।। मुहूर्त में जो फाँसी पर चढ़ेगा वह राजा नहीं चक्रवर्ती बनेगा। उसके सिर पर पूरे संसार का ताज होगा।

14. कहा राजा ने बात सच गर यही
गुरु का कथन, झूठ होता नहीं है।
कहा राजा ने फाँसी पर मैं चढ़ेगा
इसी दम फाँसी पर मैं ही टॅगूंगा।
चढ़ा फाँसी राजा बजा खूब बाजा
प्रजा खुश हुई जब मरा मूर्ख राजा
बजा खूब घर-घर बधाई का बाजा
थी अंधेर नगरी, था अनबूझ राजा।।

सन्दर्भ - पूर्ववत्।

अर्थ- जब राजा को गुरु जी से पता चला कि इस शुभ मुहूर्त में फाँसी पर चढ़ने वाला चक्रवर्ती राजा बनेगा तो उसने कहा-

अगर यह बात सच है तो मैं स्वयं इसी क्षण फाँसी पर चढ़ेगा। इस प्रकार राजा फाँसी पर चढ़ गया। प्रजा में खुशी की लहर दौड़ गई। मूर्ख राजा के मरते ही घर-घर में बधाई का बाजा बजने लगा।

टके की बात

प्रश्न 1. टका पुराने जमाने का सिक्का था। अगर आजकल सब चीजें एक रुपया किलो मिलने लगे तो उससे किस तरह के फायदे और नुकसान होंगे?

उत्तर: फायदा-गरीबों को भी सब चीजें खरीदने का मौका मिलेगा। अमीर-गरीब का भेद खत्म हो जाएगा।
नुकसान-बाजार मंदा पड़ता जाएगा। देश की अर्थव्यवस्था लचर हो जाएगी।

प्रश्न 2. भारत में कोई चीज़ खरीदने-बेचने के लिए रुपये का इस्तेमाल होता है और बांग्लादेश में 'टके' का। 'रुपया' और 'टका' क्रमशः भारत और बांग्लादेश की मुद्राएँ हैं। नीचे लिखे देशों की मुद्राएँ कौन-सी हैं?
सऊदी अरब जापान फ्रांस, इटली इंग्लैंड

उत्तर:

- सऊदी अरब – दीनार
- जापान – येन
- फ्रांस – यूरो
- इटली – यूरो
- इंग्लैंड – पाउंड

कविता की कहानी

प्रश्न 1. इस कविता की कहानी अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर: एक बार एक गुरु और एक चेला बिना पैसे घूमने निकले। रास्ते में उन्हें एक ग्वालिन मिली। ग्वालिन ने बताया कि यह अंधेर नगरी है, यहां सब एक टके का मिलता है। गुरुजी यह सुनकर चले गए, लेकिन चेला वहीं रह गया।
बाजार में सब एक टके का था। बरसात में दीवार गिर गई। राजा ने मंत्री को फाँसी की सजा सुनाई, लेकिन मंत्री दुबला था और फाँसी का फंदा उसकी गर्दन में नहीं आया।
राजा ने संतरी को मोटी गर्दन वाले की खोज में भेजा। संतरी को चेला मिल गया। चेले को पकड़कर राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने उसे फाँसी पर चढ़ाने का आदेश दिया।
चेला चालाक था। उसने कहा कि फाँसी पर चढ़ाने से पहले उसे अपने गुरुजी का दर्शन कराओ। गुरुजी को बुलाया गया। उन्होंने चेले के कान में कुछ मंत्र गुनगुनाया। फिर गुरु-चेला आपस में झगड़ने लगे।
गुरु कहता था मैं फाँसी पर चढ़ेगा और चेला कहता था कि मैं। राजा कुछ देर तक उनका झगड़ा देखता रहा। फिर उसने उन दोनों को अपने पास बुलाया और झगड़ा का कारण पूछा।

egyanarchive

गुरु ने कहा कि यह बहुत ही शुभ मुहूर्त है। इस मुहूर्त में जो फाँसी पर चढ़ेगा वह रोजा नहीं बल्कि चक्रवर्ती बनेगा। पूरे संसार का छत्र उसके सिर चढ़ेगा।

मूर्ख राजा बोल पड़ा-यदि ऐसी बात है तो मैं फाँसी पर चढ़ेगा। राजा को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। इधर प्रजा में खुशी की लहर दौड़ गई। आखिरकार उन्हें ऐसे मूर्ख राजा से मुक्ति मिल गई।

प्रश्न 2. क्या तुमने कोई और ऐसी कहानी या कविता पढ़ी है जिसमें सूझ-बूझ से बिगड़ा काम बना हो, उसे अपनी कक्षा में सुनाओ।

उत्तर: हाँ, मैंने कई कहानियाँ और कविताएँ पढ़ी हैं जिनमें सूझ-बूझ से बिगड़ा काम बना हो।

कहानियाँ:

खरगोश और कछुआ: इस कहानी में, खरगोश अपनी गति पर इतना घमंडी होता है कि वह कछुआ को दौड़ में हराकर आराम करने लगता है। नतीजतन, कछुआ धीरे-धीरे लेकिन लगातार आगे बढ़ता रहता है और दौड़ जीत जाता है।

शेर और भेडिया: इस कहानी में, एक शेर और एक भेडिया एक साथ शिकार करते हैं। शेर भेडिये को शिकार बांटने का काम सौंपता है। भेडिया अपनी सूझ-बूझ का इस्तेमाल करता है और शिकार को तीन भागों में बाँट देता है। शेर को दो भाग पसंद नहीं आते हैं और वह भेडिये को तीसरा भाग भी दे देता है। इस तरह, भेडिया अपनी चतुराई से पूरा शिकार हासिल कर लेता है।

तीन मूर्ख: इस कहानी में, तीन मूर्ख एक नाव खरीदते हैं और उसे नदी में उतारते हैं। वे नाव को चलाने के लिए एक-दूसरे को निर्देश देते हैं, लेकिन उनकी गलत समझ के कारण नाव डूब जाती है।

प्रश्न 3. कविता को ध्यान से पढ़कर 'अंधेर नगरी' के बारे में कुछ वाक्य लिखो।

(सड़कें, बाजार, राजा का राजकाज)

उत्तर:

सड़कें- अंधेर नगरी में सड़कें चमकदार थीं।

बाजार- अंधेर नगरी के बाजार में सब चीजें टके सेर बिकती थीं।

राजा का राजकाज- अंधेर नगरी का राजा मूर्ख था। इसलिए उसका राजकाज सही नहीं था। प्रजा बहुत दुखी रहती थी। ऐसे राजा से मुक्ति चाहती थी।

प्रश्न 4. क्या ऐसे देश को 'अंधेर नगरी' कहना ठीक है? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

उत्तर:

हाँ, ऐसे देश को ही तो 'अंधेर नगरी' कहते हैं क्योंकि इस नगरी का राजा निहायत मूर्ख था। उसे यह भी पता । नहीं था कि सही क्या है गलत क्या है, किसे सजा चाहिए, किसे शाबाशी। उसके राज में प्रजा काफी दुखी रहती थी, उससे मुक्ति चाहती थी।

egyanarchive

कविता की बात

प्रश्न 1. "प्रजा खुश हुई जब मरा मूर्ख राजा।"

(क) अँधेर नगरी की प्रजा राजा के मरने पर खुश क्यों हुई?।

(ख) यदि वे राजा से परेशान थे तो उन्होंने उसे खुद क्यों नहीं हटाया? आपस में चर्चा करो।

उत्तर:

(क) मूर्ख को कोई नहीं चाहता क्योंकि वह हमेशा लोगों की परेशानी का कारण बनता है। अंधेर नगरी की प्रजा राजा के मरने पर इसलिए खुश हुई क्योंकि वह मूर्ख था। उसके मरने से उनकी वर्षों की तमन्ना पूरी हुई। वे राजा की मूर्खतापूर्ण शासन-व्यवस्था से बड़े दुखी थे। अब उनके दुख का अंत हो गया।

(ख) उन्होंने ऐसे राजा को खुद इसलिए नहीं हटाया क्योंकि यह काम आसान नहीं था। इस काम को – सफलतापूर्वक करने के लिए उन्हें किसी योग्य व्यक्ति के नेतृत्व में एकजुट होना पड़ता। सबको एकजुट करना भी मुश्किल काम होता है, और यदि काम हो भी जाए तो काफी समय लगता है।

प्रश्न 2. "गुरु का कथन, झूठ होता नहीं है।"

(1) गुरुजी ने क्या बात कही थी?

(2) राजा यह बात सुनकर फाँसी पर लटक गया। तुम्हारे विचार से गुरुजी ने जो बात कही, क्या वह सच थी?

(3) गुरुजी ने यह बात कहकर सही किया या गलत? आपस में चर्चा करो।

उत्तर:

(1) यह मुहूर्त फाँसी पर चढ़ने के लिए सबसे शुभ है। इस मुहूर्त में जो फाँसी पर चढ़ेगा वह चक्रवर्ती राजा बनेगा और उसके सिर पर पूरे संसार का छत्र होगा।

(2) बिल्कुल नहीं। राजा मूर्ख था। इसलिए गुरुजी की बात को सच मान लिया।

(3) बिल्कुल सही किया। ऐसा करके उन्होंने न केवल अपने निर्दोष चेले को बचाया बल्कि उस नगरी की सारी प्रजा को भी बचा लिया। प्रजा ऐसे मूर्ख राजा से मुक्ति चाहती थी। उनकी इच्छा गुरुजी ने पूरी की।

अलग तरह से

- अगर कविता ऐसे शुरू हो तो आगे किस तरह बढ़ेगी?

थी बिजली और उसकी सहेली थी बदली

उत्तर:

फिर से एक बार कविता पढ़ो और इस प्रश्न को स्वयं करो।

क्या होता यदि…

1. मंत्री की गर्दन फैदे के बराबर की होती?
2. राजा गुरुजी की बातों में न आता?

egyanarchive

3. अगर संतरी कहता कि “दीवार इसलिए गिरी क्योंकि पोली थी” तो महाराज किस-किस को बुलाते? आगे क्या होता?

उत्तर:

1. उसे फाँसी पर चढ़ा दिया जाता।
2. वह जीवित रहता और उसकी शासन व्यवस्था डगमगाती हुई चलती रहती। साथ ही चेले को फाँसी मिल जाती।
3. यदि संतरी कहता कि "दीवार इसलिए गिरी क्योंकि गीली थी", तो महाराज निम्नलिखित लोगों को बुलाते:

कारीगर: दीवार बनाने वाले कारीगर को बुलाया जाता।

सामग्री आपूर्तिकर्ता: दीवार बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री (जैसे ईंट, पत्थर, सीमेंट) के आपूर्तिकर्ता को बुलाया जाता।

निरीक्षक: दीवार के निर्माण का निरीक्षण करने वाले अधिकारी को बुलाया जाता।

महाराज इन सभी लोगों से पूछताछ करते कि दीवार कैसे गीली हो गई और इसकी जिम्मेदारी किसकी है।

आगे क्या होता?

यह कहानी के आगे के विवरण पर निर्भर करता है। कुछ संभावित परिणाम इस प्रकार हो सकते हैं:

1. कारीगर को दंडित किया जाता: यदि यह पाया जाता है कि कारीगर ने जानबूझकर दीवार को कमजोर बनाया था, तो उसे दंडित किया जाता।
2. सामग्री आपूर्तिकर्ता को दंडित किया जाता: यदि यह पाया जाता है कि सामग्री आपूर्तिकर्ता ने घटिया सामग्री प्रदान की थी, तो उसे दंडित किया जाता।
3. निरीक्षक को दंडित किया जाता: यदि यह पाया जाता है कि निरीक्षक ने अपना काम ठीक से नहीं किया, तो उसे दंडित किया जाता।
4. क्षतिपूर्ति का आदेश दिया जाता: महाराज दीवार के गिरने से हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति का आदेश दे सकते हैं।
5. राजा अपनी गलती स्वीकार करता: यदि यह स्पष्ट हो जाता है कि दीवार खराब निर्माण के कारण गिरी थी, तो राजा अपनी गलती स्वीकार कर सकता है और जनता से माफी मांग सकता है।

यह भी संभव है कि महाराज किसी भी व्यक्ति को दंडित न करें और दीवार के पुनर्निर्माण का आदेश दें। कहानी का अंत महाराज के चरित्र और निर्णय पर निर्भर करता है।

egyanarchive

शब्दों की छानबीन

प्रश्न 1. नीचे लिखे वाक्य पढ़ो। जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उन्हें आजकल कैसे लिखते हैं, यह भी बताओ।

(क) न जाने की अंधेर हो कौन छन में!

(ख) गुरु ने कहा तेज ग्वालिन न भग री!

(ग) इसी से गिरी, यह न मोटी घनी थी!

(घ) ये गलती न मेरी, यह गलती बिरानी!

(ङ) न ऐसी महूरत बनी बढ़िया जैसी!

उत्तर:

(क) छन - क्षण

(ख) भग - भाग

(ग) घनी - गहरी

(घ) बिरानी - परायी

(ङ) महूरत - मुहूर्त।

प्रश्न 2.चमाचम थीं सड़कें… इस पंक्ति में ‘चमाचम’ शब्द आया है। नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और दिए गए वाक्यों में ये शब्द भरो-

पटापट चकाचक फटाफट चटाचट झकाझक खटाखट चटपट।

(i) आँधी के कारण पेड़ से …………………. फल गिर रहे हैं।

(ii) हंसा अपना सारा काम ……………………. कर लेती है।

(iii) आज रहमान ने ……………………. सफेद कुर्ता पाजामा पहना है।

(iv) उस भुक्खड़ ने ……………………. सारे लड्डू खा डाले।

(v) सारे बर्तन धुलकर …………………………. हो गए।

उत्तर:

(i) पटापट

(ii) फटाफट

(iii) झकाझक

(iv) चटपट

(v) चकाचक

egyanarchive